❶
ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक
आर्य सन्देश
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

आर्य संदेश टीवी
Arya Sandesh TV
www.AryaSandeshTV.com
आर्य समाज का 24 घण्टे चलने वाला टीवी चैनल
REAL tv 303 Cruze tv 335 VooDoo Smart IPTV 2038 eBaba dailyhunt TVZON Shava tv MX PLAYER KaryTV

वर्ष 45, अंक 21 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 21 मार्च, 2022 से रविवार 27 मार्च, 2022
विक्रमी सम्वत् 2078 सृष्टि सम्वत् 1960853122
दयानन्दाब्द : 199 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

आज़ादी का अमृत महोत्सव

भारतीय स्वाधीनता के 75 वर्ष : आजादी का अमृत महोत्सव : शहीदी दिवस पर

अमर बलिदानी, वीर सपूतों, महान क्रान्तिकारियों को आर्यसमाज की ओर से शत-शत नमन्

जन्म और आर्य समाज के संस्कार:-

युवा प्रेरक भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर सन् 1907 अश्विन शुक्ल त्रयोदशी संवत 1968 को बंगा गाँव जिला लायलपुर जो अब पाकिस्तान में है, एक सिख परिवार में हुआ था। आपका परिवार क्रान्तिकारी विचारधारा का था। आपके पिता का नाम सरदार किशन सिंह तथा माता का नाम विद्यावती कौर था। सिक्ख पंथ से होते हुए भी आपके दादा अर्जुन सिंह जी स्वामी दयानन्द के विचारों से प्रभावित थे। उन्होंने प्रत्यक्ष स्वामी जी के दर्शन किये थे तथा उनके विचारों को अंगीकार कर राष्ट्रीय और सामाजिक सेवा के क्षेत्र में कूद पड़े थे। दादा अर्जुन सिंह का यज्ञोपवीत संस्कार स्वामी दयानन्द जी द्वारा किया गया। दादा अर्जुन सिंह पर स्वामी जी के विचारों का इतना प्रभाव था कि वे जब कभी निजी यात्रा को इधर-उधर जाते थे तो अपने साथ हवन कुंड जरूर रखते थे। एक बार किसी ग्रन्थि साहिब ने सत्यार्थ प्रकाश पर कुछ आक्षेप किये थे, तब अर्जुन सिंह जी ने सत्यार्थ प्रकाश सामने रखकर ग्रन्थि साहिब के आक्षेपों का खण्डन किया था। सन्दर्भ-शोधकर्ता स्व. डॉ. कुशलदेव शास्त्री के कथनानुसार/ भाषण द्वारा संग्रहीत) दादा अर्जुन सिंह जी की विचारधारा का उनके तीनों बेटों पर गहरा प्रभाव हुआ था। तीनों पुत्र किशन सिंह (भगत सिंह के पिता) स्वर्ण सिंह और अजित सिंह ये तीनों काँग्रेस के सक्रीय कार्यकर्ता थे। उस समय आर्यसमाज के नेताओं की राजकीय पार्टी भारतीय राष्ट्रीय काँग्रेस ही थी। तीनों भाई सन्-1905-1906 में काँग्रेस के बंग-भंग आन्दोलन से जुड गये थे।

युवा किशोर भगत सिंह की प्राथमिक शिक्षा बंगा गाँव में ही हुई थी। उनका शरीर सुदृढ़ और सशक्त था। वे व्यायाम, आसन इत्यादि करते थे। वे पढ़ाई में

- शेष पृष्ठ 3 पर

**जिनकी चढ़ती हुई जवानी, खोज रही अपनी कुर्बानी,
जलन एक जिनकी अभिलाषा, मरण एक जिनका त्यौहार।
नमन उन्हें हो शत-शत बार, शत-शत बार॥**

भगत सिंह जब 8 वर्ष के थे तब उनका लाहौर के बच्छोवाली आर्यसमाज में यज्ञोपवीत संस्कार करवाया गया। पं. लोकमणि तर्क वाचस्पति ने यह संस्कार किया था। ये वही लोकनाथ तर्क वाचस्पति हैं जिन्होंने विश्व प्रसिद्ध यज्ञ प्रार्थना की रचना की थी।

"यज्ञरूप प्रभो हमारे, भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड देवें छल कपट को, मानसिक बल दीजिए॥

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 198वें जन्मोत्सव पर त्रिदिवसीय वेद प्रदर्शनी

महामहिम राज्यपाल आचार्य देवव्रत ने अहमदाबाद में किया प्रदर्शनी उद्घाटन

आर्यसमाज गांधी नगर, अहमदाबाद गुजरात में दिनांक 26 फरवरी, 2022 को महर्षि दयानंद सरस्वती के 198 जन्मदिवस पर आर्य समाज कांकरिया, अहमदाबाद, गांधीनगर शाखा में तीन दिवसीय वेद प्रदर्शनी तथा उससे सम्बन्धित अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया।

इस त्रिदिवसीय कार्यक्रम के अन्तर्गत मुख्य आयोजन था वेद प्रदर्शनी का। यह वेद प्रदर्शनी (1) वेद के आविर्भाव के इतिहास खण्ड (2) ऋग्वेद परिवार खण्ड (३) यजुर्वेद परिवार खण्ड (4) सामवेद परिवार खण्ड तथा (5) अथर्ववेद परिवार खण्ड- इस प्रकार से पांच खण्ड में विभाजित थी। इन पांचों खण्डों में समग्र मुद्रित वैदिक साहित्य को प्रदर्शित किया गया था। ये ग्रन्थ मूल संस्कृत में थे तथा उनके उपलब्ध हिन्दी, अंग्रेजी, गुजराती भाषा के अनुवादित ग्रन्थों को भी यहाँ रखा गया था।

- शेष पृष्ठ 5 पर

आर्यसमाज आदर्श नगर, दिल्ली के निकट नगर निगम द्वारा महर्षि दयानन्द द्वार का लोकार्पण

आर्यसमाज मार्ग आदर्श नगर दिल्ली के निकट महर्षि दयानंद द्वार का लोकार्पण कार्यक्रम बड़े हर्षोल्लास के साथ दिनांक 20 मार्च 2022 रविवार को सम्पन्न हुआ। मुख्य अतिथि श्री नवीन त्यागी जी ने रिबन काटकर एवं नारियल फोड़कर विधिवत कार्यक्रम का उद्घाटन किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्रीमती गरिमा गुप्ता (निगम पार्षद) ने की। विशिष्ट अतिथियों में श्री राजकुमार भाटिया जिला अध्यक्ष केशव पुरम, पूर्व निगम पार्षद श्रीमती नीलम बुद्धिराजा, श्री अरुण गुप्ता, श्री भूपेंद्र जैन (चेयरमैन सद्भावना सभा) श्री रोशन कंसल, श्री राम कुमार कंसल, श्री सतीश चड्ढा (महामंत्री आर्य केंद्रीय सभा) उपस्थित थे। यह कार्यक्रम आर्य समाज आदर्श नगर के प्रांगण में हुआ। महर्षि दयानंद द्वार का निर्माण एवं नामकरण निगम पार्षद श्रीमती गरिमा गुप्ता जी के सहयोग से हुआ जिसके लिए आर्यसमाज आदर्श नगर दिल्ली के प्रधान श्री रविन्द्र कुमार बत्रा ने उनका धन्यवाद किया। श्री नवीन त्यागी जी ने आर्यसमाज आदर्श नगर के अधिकारियों उपप्रधान श्री संजय सोनी, मंत्री श्री प्रवीण बत्रा, उपमंत्री श्रीमती सुदीप्ता कुशवाहा कोषाध्यक्ष श्री देवेंद्र जावा जी के सहयोग के लिए उनका धन्यवाद किया। श्री राजकुमार भाटिया जी ने कहा कि महर्षि दयानंद द्वार का बहुत सुंदर स्वरूप हम सबके सामने आया है। आर्यसमाज के अधिकारी इसके सुंदर स्वरूप को बनाए रखने में अपना सहयोग दें। आर्यसमाज के मंत्री श्री प्रवीण बत्रा ने संकल्प व्यक्त किया कि हम आर्यसमाज के सभी अधिकारी इस द्वार की सुंदरता को बनाए रखने में अपना हर संभव सहयोग देंगे। आर्यसमाज के सदस्यों ने आर्य मॉडल स्कूल की सभी अध्यापकों एवं अन्य कर्मचारियों ने व नगर के सभी गणमान्य व्यक्तियों ने कार्यक्रम की शोभा को बढ़ाया।

- प्रवीण बत्रा, मन्त्री

देववाणी-संस्कृत

सभी मित्र हों

वेद-स्वाध्याय

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात्।
अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु।। -अथर्व. 19/15/6
ऋषिः **अथर्वा।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **त्रिष्टुप्।।**

शब्दार्थ - मित्रात् अभयं, अमित्रात् अभयम् = मुझे मित्र से भय न हो, अमित्र से भी भय न रहे। **ज्ञातात् अभयम्** = जो ज्ञात हो गया है उससे भय न हो और **परोक्षात् अभयम्** = जो आगे है, आनेवाला है उससे भी भय न हो। **नः नक्तं अभयं, दिवा अभयम्** = हम रात में भी अभय हों, दिन में भी अभय हो, **सर्वाः आशाः** = सब दिशाएँ, सब दिशाओं के वासी प्राणी **मम मित्रं भवन्तु** = मेरे मित्र हो जाएँ, मेरे मित्ररूप रहें।

विनय - हे जगदीश्वर! इस तेरे जगत् में, इस तेरे न्यायपूर्ण सच्चे शासन में रहते हुए मुझे कोई भी भय क्यों होना चाहिए? तू सब जगत् में सदा कल्याण-ही-कल्याण कर रहा है तो फिर मुझे कभी डर क्यों हो? भय करना नास्तिक होना है, तुझपर अविश्वास करना है, तुझे भुलाना है, तेरा द्रोही होना है, अतः है मेरे परम प्यारे, कल्याण स्वरूप स्वामिन्! आज से मैं मन की दुर्बलता को छोड़कर अभय रहने का व्रत लेता हूँ। मैं अपनी शक्तिभर किसी भी भय के अधीन न होऊँगा। हे मेरे जगदीश्वर! इसमें मेरी सहायता करो। भय न छोड़कर तो मैं संसार में कुछ भी नहीं कर सकता, सत्यपथ पर नहीं चल सकता, कभी भी तेरे दर्शन नहीं पा सकता, अतः हे प्रभो! मुझे ऐसा बल दो कि संसार में किसी भी मनुष्य से मुझे भय न हो; न मित्र से भय हो, न अमित्र से। सत्यपथ पर चलते हुए मुझे न मित्रों की नाराज़गी आदि का भय हो और न अमित्रों द्वारा क्लेश पाने का। तेरे सामने मित्र-अमित्र सब समान हैं। तेरे सामने मित्रों के अमित्र हो जाने से क्या डरना और अमित्रों द्वारा जो मुझ पर कष्ट-विपत् आता है उससे क्या घबराना? अनिष्ट तो मित्र और अमित्र दोनों द्वारा लाये जा सकते हैं और लाये जाते हैं, अतः इन दोनों से ही मुझे भय से बचा। जो कुछ है और जो कुछ होगा, वह सब निःसन्देह शुभ ही है। मेरा निर्बल मन बहुत-सी घटित, ज्ञात, परिचित बातों को अनिष्टकर मानकर उनसे तो भयत्रस्त होता ही है, पर वह आगे आनेवाली बातों में सदा अनिष्ट की आशंका करके भी यूँ ही भयपीड़ित बना रहता है- ''आगे न जाने क्या होगा'', मेरे इस कर्म की सिद्धि होगी या नहीं, ''कहीं इसका फल-परिणाम बुरा न निकले'', इस प्रकार का जो भय मुझमें रहता है वह तो बड़ा ही आत्मघातक है, अतः हे मेरे अन्तर्यामिन्! मुझमें अब ऐसा ज्ञान प्रदीप्त कर दो कि मेरे सब मोह हट जाएँ और मैं तेरे देदीप्यमान कल्याण स्वरूप को देखता हुआ दिन में या रात में, सदा, सब कालों में, सब अवस्थाओं में अभय रहूँ। ऐसा बल दो कि अन्धकार हो या प्रकाश, विपत् हो या सम्पत्, अनुकूलताएँ हों या प्रतिकूलताएँ, मैं सब दिशाओं में सदा निर्भय रह सकूँ।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

सम्पादकीय

संयुक्त राष्ट्र महासभा में इस्लामोफोबिया विरोधी दिवस

यह इस्लामोफोबिया का नया पाखण्ड क्या है?

एक बड़ी प्रसिद्ध कहावत है कि ट्रुथ इज द फर्स्ट कैजुअल्टी ऑफ वार एंड हिपोक्रेसी यानि युद्ध और पाखंड में पहला हमला सच्चाई पर होता है। आजकल ये होता भी दिख रहा है। क्योंकि हाल ही में संयुक्त राष्ट्र महासभा में इंटरनेशनल डे टू कॉम्बैट इस्लामोफ़ोबिया यानी इस्लामोफ़ोबिया विरोधी दिवस मनाने के लिए पाकिस्तान की ओर से लाए गए एक प्रस्ताव को पारित किया गया। जिस पर पर भारत ने कड़ा एतराज जताया ना केवल एतराज जताया बल्कि दुनिया को इस्लाम का दूसरा चेहरा भी दिखाया।

इस्लामोफोबिया दो अलग-अलग शब्दों से मिलकर बना हुआ है। ये दो शब्द हैं इस्लाम और फोबिया। मसलन इस्लाम को लेकर डर या भय बढ़ रहा है तो इसके लिए साल में एक दिवस मनाया जायेगा। ऐसे में सवाल उठ रहा है कि आखिर ये पाखंड क्यों और इस पाखंड के पीछे कौन है?

अगर राजनितिक नेताओं के बात करें तो तीन लोग इस पर सबसे आगे काम कर रहे हैं- पाकिस्तान का इमरान खान। तुर्की वाला कथित खलीफा आर्दाआन और मलेशिया वाला मताहिर। इनके अलावा इसके पीछे फिर कुछ लेखक, कलमकार, कलाकार और कथित उदारवादी खड़े हो जाते हैं। दुनिया में चल पड़ता है एक बार फिर वही ट्रेंड जिसका नाम है इस्लामोफोबिया।

अगर इसका अच्छी नीयत विश्लेषण किया जाये तो आज दुनिया में तीन किस्म के मुसलमान हैं। एक जिहादी, दूसरे बेपरवाह और तीसरे कथित मानवतावादी। इसे अंकगणित में देखा जाये तो आज दुनिया में सबसे बड़ी संख्या में जो लोग है, वो हैं बेपरवाह मुसलमान। यानि वो मुसलमान जो इस्लाम के समर्थक तो हैं, मगर उसकी हानिकारक बातों से काफी-कुछ अनजान हैं। उन्हें नहीं पता इस्लाम क्या है। वो बस एक भीड़ है जो इस्लाम के नाम पर मुल्ला के एक इशारे पर नमाज की लाइन में खड़ी हो जाती है। दूसरे नंबर पर है जिहादी- जो उन्हें उकसाते हैं। ये भी इस्लाम के समर्थक हैं, जो दुनिया को सातवीं सदी की तरफ पूरी ताकत से खींच रहे है। ये कट्टर मुल्लावादी मौलानावादी है। इनके अपने बहुत से आतंकी संगठन हैं। ये अफगानिस्तान में भी हैं, सीरिया में भी हैं। पाकिस्तान में भी हैं और तो और अमेरिका से लेकर यूरोप तक फैले हैं। तीसरे नम्बर पर है ढोंगी, मानवतावादी, सेक्युलर मुसलमान। हालाँकि ये बहुत कम हैं, पर उनका पाखंड ये है कि वे राजनीतिक इस्लाम का सच जानकर उसे खारिज करते हैं। इनमें कई कथित लेखक, कलाकार और फ़िल्मकार आदि हैं।

अगर अब इसमें एक चौथा पक्ष और मिला दिया जाये तो वो है राजनितिक इस्लामवादी। इसमें इमरान, आर्दाआन, मताहिर और ओवेसी जैसे लोग हैं। ये भी मक्का मदीने की रियासत का ख्वाब देखते हैं। बस अंतर इतना है राजनितिक और मानवतावादी इस्लाम कोट-पैंट-टाई पहने खड़ा है तो मुल्लावादी और जिहाद का समर्थक इस्लाम कुर्ता सलवार पहने हैं। और ये तीनों मिलकर इस बेपरवाह मुसलमान के सिर पर टोपी रखकर इस्लाम चला रहे हैं। लेकिन जब-जब कोई बेपरवाह इनकी झोखी गयी आग में जल जाता है तो लोग इस्लामोफोबिया का नाटक पाखंड शुरू कर देते हैं।

इसके विपरीत जब कोई लेखक, चित्रकार या पत्रकार इन बेपरवाह मुसलमान को समझाने की कोशिश में कोई चित्र या लेख लिख डालें तो अगला कदम जिहादी के हाथ में होता है। पत्रिका के दफ्तर पर आतंकी हमला होता है, कई कार्टूनिस्ट को मार दिया जाता है। जब दुनिया इस घटना की निंदा करती है तो तब फिर वो राजनितिक धड़ा और कथित लिबरल लोग सामने आते हैं और कहते हैं कि ये इस्लामोफोबिया है।

.....आज दुनिया में तीन किस्म के मुसलमान हैं। एक जिहादी, दूसरे बेपरवाह और तीसरे कथित मानवतावादी। इसे अंकगणित में देखा जाये तो आज दुनिया में सबसे बड़ी संख्या में जो लोग हैं, वो हैं बेपरवाह मुसलमान। यानि वो मुसलमान जो इस्लाम के समर्थक तो हैं, मगर उसकी हानिकारक बातों से काफी-कुछ अनजान हैं। उन्हें नहीं पता इस्लाम क्या है। वो बस एक भीड़ है जो इस्लाम के नाम पर मुल्ला के एक इशारे पर नमाज की लाइन में खड़ी हो जाती है। दूसरे नंबर पर है जिहादी- जो उन्हें उकसाते हैं। ये भी इस्लाम के समर्थक हैं, जो दुनिया को सातवीं सदी की तरफ पूरी ताकत से खींच रहे है। ये कट्टर मुल्लावादी मौलानावादी है। इनके अपने बहुत से आतंकी संगठन हैं। ये अफगानिस्तान में भी हैं, सीरिया में भी हैं। पाकिस्तान में भी हैं और तो और अमेरिका से लेकर यूरोप तक फैले हैं। तीसरे नम्बर पर है ढोंगी, मानवतावादी, सेक्युलर मुसलमान। हालाँकि ये बहुत कम हैं, पर उनका पाखंड ये है कि वे राजनीतिक इस्लाम का सच जानकर उसे खारिज करते हैं। इनमें कई कथित लेखक, कलाकार और फ़िल्मकार आदि हैं। ......

बस समझने के लिए तो ये पाखंड काफी है क्योंकि ये पाखंडी हर जगह हैं। ये पाखंडी दिल्ली में भी है और फ्रांस में भी। ये न्यूयॉर्क में भी हैं और लन्दन भी। भारत में भी इस तरह की सोच के चलते देश के दो टुकड़े हुए और अलग देश का निर्माण हुआ। अमेरिका में इस सोच के कारण वर्ल्ड ट्रेड टॉवर पर हमला हुआ, लन्दन दहला पेरिस में ट्रक से 84 लोग कुचल डाले गये। एक शिक्षक की गर्दन रेत दी गयी। इन हत्याओं की निंदा भर्त्सना के बावजूद जब इनका जिक्र किया जाता है तो पाखंड शुरू कर दिया जाता है इस्लामोफोबिया।

दूसरा पाखंड देखें तो जब पिछले कुछ सालों में सीरिया, इराक, अफगानिस्तान आदि देशों से लाखों की संख्या में जिहादी मुस्लिमों ने बेपरवाह मुस्लिमों का कत्ल किया। बेपरवाह मुसलमान इधर-उधर भागने लगे। जान बचाने लगे। तो अचानक मानवतावादी लिबरल गैंग सामने आया और इनके लिए यूरोप से शरण मांगी। यूरोप के कई देशों ने भी इनकी ये मानवतावाद की घुट्टी पीकर शरण दे दी। शरण पाकर इन्होंने इस्लाम के नाम पर यूरोप में गर्दन रेतने, चोरी, बलात्कार, हिंसा, धमाके करने शुरू कर दिए। यानि वो काम जिस जिहाद से बचकर भागे थे, वहां जाकर ये भी काम करने लगे। इस्लाम की मांग करने लगे, शरियत की मांग करने लगे। जब लोगों ने कहा, ये तो गलत है, इस्लाम के नाम पर हिंसा की जा रही है। - *शेष पृष्ठ 7 पर*

प्रथम पृष्ठ का शेष

अमर बलिदानी, वीर सपूतों, महान क्रान्तिकारियों को .....

सबसे अग्रणी रहते थे तथा उनके हस्ताक्षर बहुत सुन्दर थे। आध्यात्मिक और उच्च आध्यात्मिक पढ़ाई के लिए उन्हें नवाकोट लाया गया। घर और अन्य रिश्तेदारों ने पिता किशन सिंह पर दबाव डाला कि वे भगतसिंह का दाखिला खालसा स्कूल में करायें। पिता ने भगत सिंह को आर्यसमाज की विचारधारा से परिपूर्ण दयानन्द एंग्लो वैदिक स्कूल (डी.ए.वी) में ही प्रवेश करवाया, जिससे कि पढ़ाई के साथ राष्ट्रभक्ति के संस्कार उन पर पड़ सकें। नौवीं कक्षा तक आपको पढ़ाई के साथ देशभक्ति के संस्कार भी प्राप्त होते चले गये। किशोर भगत सिंह को क्लास में अंग्रेजी की अपेक्षा संस्कृत से बहुत लगाव था।

भगत सिंह जब 8 वर्ष के थे तब उनका लाहौर के बच्छोवाली आर्यसमाज में यज्ञोपवीत संस्कार करवाया गया। पं. लोकमणि तर्क वाचस्पति ने यह संस्कार किया था। ये वही लोकनाथ तर्क वाचस्पति हैं जिन्होंने विश्व प्रसिद्ध यज्ञ प्रार्थना की रचना की थी।

"यज्ञरूप प्रभो हमारे,
भाव उज्ज्वल कीजिए।
छोड देवें छल कपट को,
मानसिक बल दीजिए।।

इन्हीं पं. लोकनाथ तर्क वाचस्पति के पौत्र राकेश शर्मा हैं जो भारत के प्रथम रॉकेटयान के यात्री हैं जिन्होंने अन्तरिक्ष की यात्रा की थी। 11 वर्ष की आयु में किशोर भगत सिंह ने अपने पिता किशन सिंह जो को पत्र लिखा था जो आर्य परम्परा के अनुसार पत्र पर पहले ओ३म् लिखा जाता है और अभिवादन के रूप में 'नमस्ते' लिखा जाता है। वे हमेशा अपने पत्रों पर इनका उल्लेख अवश्य करते। इससे यह सिद्ध होता है कि भगतसिंह पर बचपन से ही आर्यसमाज के संस्कारों का प्रभाव रहा था।

घरवालों ने उनकी सगाई के लिए जोर डाला तब वे अपने पिताजी को पत्र में लिखते हैं-

ओ३म्

पूज्य पिता जी

नमस्ते।

मेरी जिन्दगी मकसदे अल्ला यानी "आजादी हिन्द" के असूलों के लिए समर्पित हो चुकी है इसलिए मेरी जिन्दगी में आराम और दुनिया का आकर्षण नहीं है। आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापू जी ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त ऐलान किया था कि मुझे खिदमते वतन के लिए समर्पित किया जा चुका है। लिहाजा मैं उस वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ।

जहाँ तक देशभक्ति और राष्ट्रवाद का सम्बन्ध है ये सब संस्कार भगतसिंह के जीवन में आर्यसमाज से ही आये थे और वे अन्त तक इन विचारों पर दृढ़ रहे।

क्रान्तिकारियों से सम्पर्क:-

भगतसिंह जब माध्यमिक स्कूल में पढ़ रहे थे तब उनका सम्पर्क पंजाब केसरी लाला लाजपतराय से हुआ। स्वामी श्रद्धानन्द के पुत्र इन्द्र विद्यावाचस्पति, रामप्रसाद बिस्मिल चन्द्रशेखर आजाद तथा स्वातन्त्र्य वीर सावरकर आदि के साथ हुआ था। वीर सावरकर भी प्रेरणा से ही आप चन्द्रशेखर आजाद से जुड गये तथा स्वगठित "नौजवान भारत सभा" का विलय "हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसियेशन" में कर दिया। इस संस्था का उद्देश्य ही भारत को अंग्रेजों की गुलामी से आजाद कराना था। आपने वीर विनायक दामोदर सावरकर द्वारा लिखित पुस्तक "1857 का प्रथम स्वतन्त्रता संग्राम" पढ़ने का अवसर प्राप्त हुआ जिसके कारण वे प्रखर राष्ट्रवादी बन गये। जून 1924 में आप यरवडा जेल पूना में वीर सावरकर से भी मिले थे तथा क्रान्ति के प्रथम गुरु सावरकर से स्वतन्त्रता सम्बन्धी संस्कार प्राप्त किये। वीर सावरकर के ही "अभिनव भारत" से आपने बम बनाने की टैक्नीक हासिल की थी।

....जब यह घोषणा हुई कि दोनों विधेयक वायसराय के विशेष अधिकार से पास हो गये हैं तभी भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त दोनों उठकर खडे हो गये और दीर्घा के सामने आकर भगतसिंह ने एक बम नीचे हाल में ऐसी जगह फेंका जहाँ कोई सदस्य बैठा नहीं था। बम फेंककर भगतसिंह ने पिस्तौल से छत की ओर दो फायर कर दिये। बम का जोर से धमाका हुआ और चारों तरफ धूंआ फैल गया। असेम्बली हॉल में चारों तरफ अफरा तफरी मच गयी, लोग बाहर भागने लगे। हॉल में चारों तरफ हल्ला और शोर मच गया। दोनों ने "इन्कलाब जिन्दाबाद" और साम्राज्यवाद मुर्दाबाद" के नारे लगाने शुरू किये। उसी के साथ उन्होंने कुछ पर्चे भी फेंके जिनमें लिखा था-"अंग्रेजी सरकार के बहरे कानों तक आवाज पहुंचाने के लिए ये बम फेंके गये हैं।" भागदौड के बीच सारा असेंबली हॉल खाली हो गया लेकिन दोनों क्रान्तिकारी दर्शक दीर्घा में ही खडे रहे। वहाँ से हिले नहीं। कुछ देर बाद भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया।....

सायमन कमिशन का विरोध

3 अक्तूबर सन् 1928 में साइमन कमिशन लाहौर पहुंचा। जिसका विरोध वहाँ के नौजवान क्रान्तिकारियों ने किया। भगत सिंह ने लाला लाजपतराय के नेतृत्व में अनेकों नौजवानों के साथ साइमन कमिशन का विरोध किया और काले झण्डे दिखाये। चूंकि लाला लाजपतराय सबसे आगे थे, और मोर्चे का नेतृत्व कर रहे थे, उसी समय जे. स्कॉट ने लाला जी पर ताबडतोड लाठियों से प्रहार किया, जिससे उनके सीने और माथे से खून बहने लगा इसी अवस्था में उन्होंने अंग्रेजों को चेतावनी देते हुए कहा- मेरे सिर पर पडी एक एक लाठी अंग्रेजों के कफन की कील सिद्ध होगी।" भगतसिंह और अन्य साथियों ने उन्हें संभाला और अस्पताल में भर्ती करवाया लेकिन उपचार के दौरान वहीं उनका निधन हो गया। भगतसिंह को इस शहादत से जबरदस्त मानसिक आघात पहुंचा और मन ही मन उन्होंने प्रण किया कि मैं इस शहादत का अवश्य प्रतिशोध लूंगा। उन्होंने चन्द्रशेखर आजाद और राजगुरु के साथ मिलकर जे. स्कोट के कुकृत्य का बदला लिया। फर्क इतना रहा कि उसकी जगह साण्डर्स मारा गया। सॉण्डर्स की हत्या के बाद भगतसिंह भूमिगत होकर कोलकाता के कार्नवालिस स्ट्रीट पर स्थित आर्य समाज में 3 मास तक रहे। वे आर्य समाज को अपनी मातृपितृ संस्था मानते थे, जब कभी आवश्यकता होती थी तो वे आर्य समाज और उनके नेताओं के सम्पर्क में रहते। स्वामी श्रद्धानंद के पुत्र और प्रसिद्ध राष्ट्रवादी विचारक पं. इन्द्रविद्या वाचस्पति, भाई परमानन्द और जयचन्द्र विद्यालंकार जैसे क्रान्तिकारी विचारकों के साथ हमेशा उनका सम्बन्ध रहता था। दिल्ली में पं. इन्द्रविद्या वाचस्पति के साथ आप "अर्जुन" नामक पत्र चलाते थे। काकोरी विदेशी लूटकाण्ड की घटना को आपने पं. रामप्रसाद बिस्मिल, चन्द्रशेखर आजाद, अशफाक उल्ला खाँ के साथ मिलकर मजबूती से अंजाम दिया था। पं. इन्द्र विद्या वाचस्पति जी सरदार भगत सिंह के बारे में लिखते हैं- "जब कभी हिन्दू-मुस्लिम समस्या पर बात छिड़ती तो वे सदा साम्प्रदायिकता और कट्टरता तथा हिंसा के विरुद्ध अपना पक्ष रखते, अन्य सब विषयों पर उनके विचार उदार और निर्भीक होते थे। हम जब केवल हिन्दू या मुस्लिम होते हैं तो हम साम्प्रदायिक होते हैं और जब हम इन्सान के रूप में होते हैं तो हम साम्प्रदायिकता से मुक्त होते हैं।" इस प्रकार की सोच रखने वाले शहीद को दायें और बायें की विचारधारा में बलात जकड़ना कहाँ तक उचित है? उनके जीवन की नींव शान्ति, सौहार्द और "वसुधैव कुटम्बकम्" की विचारधारा को प्रस्तुत करने वाले वैदिक धर्म से बनी थी, अत: उन्होंने असेम्बली में जब बम फेंका तो किसी को मारने के मकसद से नहीं फेंका। एक तरफ वे स्वामी दयानन्द के राष्ट्रवाद से भी प्रभावित थे तो दूसरी तरफ शोषण मुक्त समाज के निर्माण के प्रति आग्रही भी थे। अंग्रेज नहीं चाहते थे कि भारतीय उद्योगों में उन्नति कर पाये। गरीब गरीब रहे और अमीर उनका शोषण करते रहें। उन्होंने आर्थिक क्षेत्र में भी फूट डालो और राज करो की नीति अपनाई थी। भगत सिंह गरीबों के शोषण के खिलाफ थे, इसका यह मतलब नहीं हो जाता कि वे दायें बायें झुके हुए थे।

अॅसेम्बली बम काण्ड और फांसी

क्रान्तिकारी भगतसिंह और उनके साथियों का यह विचार सामने आया कि रोज की छुटपुट घटनाओं और रक्तपात की बजाय अंग्रेजों के विरुद्ध एक ऐसा धमाका किया जाय जिसकी गूंज सात समुन्दर पार तक जाय। और अंग्रेजी हुकूमत जड से हिल जाय। इस घटना को अंजाम देने के लिये उन्होंने अपने साथ बटुकेश्वर दत्त को लिया। इसके लिए उन्होंने केन्द्रीय विधान सभा में बम फेंकने का निश्चय किया।

घटना 8 अप्रैल सन् 1929 की है। उस दिन केन्द्रीय विधानसभा का अधिवेशन चल रहा था। श्री विठ्ठलभाई पटेल अध्यक्ष के आसन पर बैठे हुए थे। मोतीलाल नेहरू, मदनमोहन मालवीय, बै. मुहम्मद अली जिन्ना आदि कई राष्ट्रीय नेता सदस्य के रूप में हॉल में उपस्थित थे। बटुकेश्वर दत्त और भगतसिंह को असेम्बली का पास दिलवाने में क्रान्तिकारी सदस्य जयदेव कपूर ने अहम कार्य किया। भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त दर्शक दीर्घा में जाकर अपने अपने स्थान पर बैठ गये। वे यहां बम फेंककर किसी की जान लेना नहीं चाहते थे, बल्कि अंग्रेजी सरकार को मजदूरों के खिलाफ देश में कोई कार्यवाही करने की हिम्मत न हो । यह उद्देश्य था विधानसभा में बहुमत से ये दोनों विधेयक पास न हो सकें बल्कि वायसराय ने अपने विशेष अधिकार से यह पास करा लिये।

ये दो विधेयक थे पहला मजदूरों से हड़ताल करने का अधिकार छीनने वाला विधेयक और दूसरा युवकों के आन्दोलन का दमन करने वाला विधेयक (जन सुरक्षा)। जब यह घोषणा हुई कि दोनों विधेयक वायसराय के विशेष अधिकार से पास हो गये हैं तभी भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त दोनों उठ खडे हो गये और दीर्घा के सामने आकर भगतसिंह ने एक बम नीचे हाल में ऐसी जगह फेंका जहाँ कोई सदस्य बैठा नहीं था। बम फेंकर भगतसिंह ने पिस्तौल से छत की ओर दो फायर कर दिये। बम का जोर से धमाका हुआ और चारों तरफ धूंआ फैल गया। असेम्बली हॉल में चारों तरफ अफरा तफरी मच गयी, लोग बाहर भागने लगे। हॉल में चारों तरफ हल्ला और शोर मच गया। दोनों ने "इन्कलाब जिन्दाबाद" और साम्राज्यवाद मुर्दाबाद" के नारे लगाने शुरू किये। उसी के साथ उन्होंने कुछ पर्चे भी फेंके जिनमें लिखा था-"अंग्रेजी सरकार के बहरे कानों तक आवाज पहुंचाने के लिए ये बम फेंके गये हैं।" भागदौड के बीच सारा असेंबली हॉल खाली हो गया लेकिन दोनों क्रान्तिकारी दर्शक दीर्घा में ही खडे रहे। वहाँ से हिले नहीं। कुछ देर बाद भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त को गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद अंग्रेजों ने अपनी पूरी शक्ति क्रान्तिकारियों का सफाया करने में लगा दी। कुछ दिन बाद सुखदेव और राजगुरु को भी गिरफ्तार कर लिया गया। इसके बाद उन्हें लाहौर ले जाया गया। वहाँ पर पहले से ही सांडर्स की हत्या का मुकदमा चल रहा था। असेम्बली बम कांड और सांडर्स वध काण्ड दोनों के लिए तीनों भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव पर खून और हत्या के आरोप में सजा सुनाई गई। 23 मार्च सन् 1931 को राजगुरु और सुखदेव के साथ भगतसिंह को फांसी दी गई। तीनों के शवों के टुकडे कर बोरियों में भर सतलुज नदी के किनारे मिट्टी का तेल छिडक कर जलाने का निम्न स्तरीय कार्य अंग्रेजों ने किया। ऐसे महान क्रान्तिवीरों को आर्य समाज और देशवासियों की ओर से शत शत नमन।

- डॉ. लोखण्डे शास्त्री
लातूर (महाराष्ट्र)

शहीदी दिवस (23 मार्च) पर विशेष स्मरण

आर्यसमाज की भट्टी से तपकर निकले थे भगत सिंह

...... भगत सिंह की शादी तो हुई पर कैसे हुई इसका वर्णन करते हुए भगत सिंह की शहादत के बाद उनके घनिष्ठ मित्र भगवती चरण वोहरा की धर्मपत्नी दुर्गा भाभी ने, जो स्वयं एक क्रांतिकारी वीरांगना थीं, कहा था, ''फांसी का तख्ता उसका मंडप बना, फांसी का फंदा उसकी वरमाला और मौत उसकी दुल्हन। भगत सिंह ने मन ही मन स्वयं को राष्ट्र पर कुर्बान करने की प्रतिज्ञा कर ली थी, पर उनके परिजन उनकी शादी करना चाहते थे। भगत सिंह के मित्र विजय कुमार सिन्हा ने एक बार उससे पूछा था कि, ''तुम शादी क्यों नहीं करना चाहते?'' तो उन्होंने दो टूक कहा, "मैं विधवाओं की संख्या नहीं बढ़ाना चाहता।".........

जलियांवाला बाग में किशोरावस्था की दहलीज पर दस्तक दे रहा वह (12 वर्षीय) सिख लड़का उस मैदान पर ठिठक कर खड़ा हो गया, जहां खून से लथपथ धरती की गंध एक ही दिन पहले हुए बर्बर हत्याकांड की गवाही दे रही थी। अपनी जेब से उसने एक शीशी निकाली जो वह लहू-सनी मिट्टी डाल कर अपने साथ ले जाने के लिए लाया था। लड़का शाम को देर से घर पहुंचा। ये लड़का कोई ओर नहीं बल्कि भारत की आजादी की क्रांति की मशाल बनने वाला सरदार भगत सिंह था। किशोर भगत सिंह की उस दिन जैसे जिंदगी की दिशा ही बदल गई। उसी दिन से उसके खून में इंकलाब हिलोरें मारने लगा। वह अपने प्यारे देश के लिए जान न्यौछावर करने के लिए वचनबद्ध सिपाही बन गया। एक दिन उसने अपना वचन निभा दिया। कितने कम शब्दों में वयोवृद्ध लेखक प्रो. मलविंदर सिंह वढ़ैच ने सरदार भगत सिंह के जीवन का उत्कृष्ट वर्णन कर डाला।

भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर, 1907 को पंजाब के लायलपुर जिला (फैसलाबाद, वर्तमान पाकिस्तान) के बंगा गांव में हुआ था। भगत सिंह के दादा सरदार अर्जुन सिंह पहले सिख थे जो आर्य समाजी बने। इनके तीनों सुपुत्र-किशन सिंह, अजीत सिंह व स्वर्ण सिंह प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी थे। परिवार पर आर्य समाज के प्रभाव बारे भगत सिंह के छोटे भाई स्व. रणबीर सिंह ने एक बार कहा था कि आर्य समाज में मेरे दादा स्व. अर्जुन सिंह शामिल थे। फिर मेरे पिता स्व. किशन सिंह, चाचा स्व. अजीत सिंह को महात्मा हंसराज जी व लाला लाजपत राय के साथ आर्य समाज का कार्य करने का अवसर प्राप्त रहा है। हमारे विचार और मानसिक उन्नति भी बड़ी हद तक आर्य समाज की देन है। अन्य बहुत से उपकारों के लिए भी हम आर्य समाज के ऋणी हैं।

यही नहीं किसी भी व्यक्ति का महान बनने के लिए महान कर्म यानि की तप करना पड़ता हैं और उस तप की प्रेरणा उसके विचार होते हैं। किसी भी व्यक्ति के विचार उसे ऊपर उठा भी सकते हैं उसे नीचे गिरा भी सकते हैं। भगत सिंह के जीवन में उन्हें कई महान आत्माओं ने प्रेरित किया जैसे करतार सिंह सराभा, भाई परमानन्द, सरदार अर्जुन सिंह, सरदार किशन सिंह आदि। सरदार अर्जुन सिंह भगत सिंह के दादा थे और स्वामी दयानंद के उपदेश सुनने के बाद वैदिक विचारधारा से प्रभावित हुए थे। सरदार अर्जुन सिंह उन महान व्यक्तियों में से थे जिन्हें न केवल स्वामी दयानंद के उपदेश सुनने का साक्षात् अवसर मिला अपितु वे आगे चलकर स्वामी जी की वैचारिक क्रांति के क्रियात्मक रूप से भागिदार भी बने। स्वामी दयानंद के हाथों से उन्हें यज्ञोपवित प्राप्त हुआ और उन्होंने आजीवन वैदिक आदर्शो का पालन करने का व्रत लिया। उन्होंने तत्काल मांस खाना छोड़ दिया और शराब को जीवन भर मुहँ नहीं लगाया। अब नित्य हवन उनका साथी और वैदिक संध्या उनके प्रहरी बन गए। समाज में फैले अन्धविश्वास जैसे मृतक श्राद्ध, पाखंड आदि के खिलाफ उन्होंने न केवल प्रचार किया अपितु अनेक शास्त्रार्थ भी किये। बताया जाता है 1897 में अज्ञानी सिखों में अलगाववाद की एक लहर चल पड़ी। काहन सिंह के नाम से एक सिख लेखक ने "हम हिन्दू नहीं" के नाम से पुस्तक लिखकर सिख पंथ को हिन्दू समाज से अलग दिखने का प्रयास किया तो सरदार अर्जुन सिंह ने "हमारे गुरु वेदों के पैरो 'अनुयायी' थे" शीर्षक से उत्तर लिखा था। इस पुस्तक में उन्होंने गुरु ग्रन्थ साहिब में दिए गए श्लोकों को प्रस्तुत लिया जो वेदों की शिक्षाओं से मेल खाते थे और इससे यह सिद्ध किया की गुरु ग्रन्थ साहिब की शिक्षाएँ वेदों पर आधारित हैं।

डीएवी को उस समय आर्य समाज की भट्टी कहा जाता है यहीं से पढ़कर निकले भगत सिंह ने लाहौर स्थित नैशनल कालेज में सन् 1921 में प्रवेश लिया। 1923 में नैशनल कालेज में उनके छात्र काल की एक घटना बताते हुए उनके गुरु जयचंद्र विद्यालंकार ने लिखा था कि भगत सिंह की शादी उसके पिता स्व. किशन सिंह करना चाहते थे। लड़की शायद महाराजा रणजीत सिंह के खानदान में किसी धनी खानदान की थी। वह बहुत सुंदर थी और बहुत-सा दहेज भी मिलने वाला था। भगत सिंह मेरे पास आया और बोला, 'मुझे कहीं भेज दीजिए।' मैंने कानपुर में विद्यार्थी जी के पास उसे भेजा। भगत सिंह की शादी तो हुई पर कैसे हुई इसका वर्णन करते हुए भगत सिंह की शहादत के बाद उनके घनिष्ठ मित्र भगवती चरण वोहरा की धर्मपत्नी दुर्गा भाभी ने, जो स्वयं एक क्रांतिकारी वीरांगना थीं, कहा था, ''फांसी का तख्ता उसका मंडप बना, फांसी का फंदा उसकी वरमाला और मौत उसकी दुल्हन। भगत सिंह ने मन ही मन स्वयं को राष्ट्र पर कुर्बान करने की प्रतिज्ञा कर ली थी, पर उनके परिजन उनकी शादी करना चाहते थे। भगत सिंह के मित्र विजय कुमार सिन्हा ने एक बार उससे पूछा था कि, ''तुम शादी क्यों नहीं करना चाहते?'' तो उन्होंने दो टूक कहा, "मैं विधवाओं की संख्या नहीं बढ़ाना चाहता।"

भगत सिंह मात्र साढ़े 23 वर्ष की अल्पायु में 'शोषण एवं साम्राज्यवाद' के खिलाफ एक वीर योद्धा व महान विचारक के रूप में लड़ते हुए लोकप्रियता की चरम सीमा पर पहुंचे। वह अपने अमूल्य जीवन को दांव पर लगाकर, अपने प्रिय देश के दुश्मन को 'बेहाल' और पीड़ित जनता को निहाल करने का भरसक प्रयास करता है। इतना सब कुछ करने के बावजूद एवं भरी जवानी में देश पर न्यौछावर होने वाला यह मतवाला देशभक्त, अपने देशवासियों

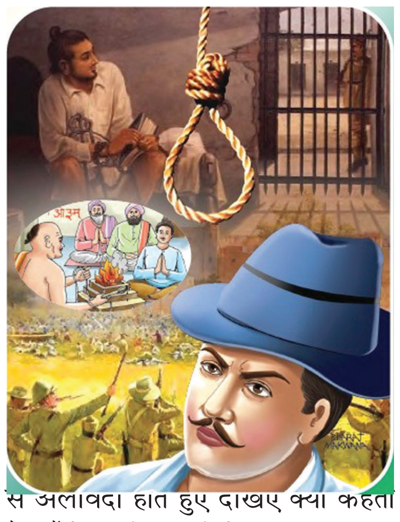

से अलविदा होते हुए दिखाए क्या कहता है, 'मैं देश की जितनी सेवा करना चाहता था उसका हजारवां हिस्सा भी नहीं कर सका।

असैंबली बम कांड के उपरांत आत्मसमर्पण कर, भगत सिंह ने बी.के. दत्त के साथ 8 अप्रैल, 1929 को गिरफ्तारी दे दी। भगत सिंह की गिरफ्तारी के बाद उन पर दिल्ली व लाहौर की अदालतों में मुकद्मा चलाया गया। फलत: 12 जून, 1929 को उन्हें काले पानी का आजीवन कारावास व 7 अक्तूबर, 1930 को मृत्यु दंड की सजा सुनाई गई। अंतत: 23 मार्च, 1931 को जब उनकी उम्र मात्र 23 साल, 5 मास व 25 दिन थी उन्हें लाहौर सैंट्रल जेल में राजगुरु व सुखदेव के साथ सायं 7.33 पर शहीद कर दिया गया।

एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में भगत सिंह का योगदान भी अपने आप में अद्भुत है। उदाहरणार्थ 8 अप्रैल, 1929 को गिरफ्तार होने से पूर्व उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम की लगभग प्रत्येक गतिविधि में बढ़-चढ़ कर भाग लिया। सन् 1920 में जब गांधी जी ने असहयोग आंदोलन शुरू किया उस समय भगत सिंह मात्र 13 वर्ष के थे और 1929 में जब गिरफ्तार हुए तो 22 वर्ष के युवा। इन 9 वर्षों में भगत सिंह की एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में हमेशा देशवासियों के सीने में अमर रहेगें। भारत माता की मुक्ति के लिए अपने प्राणों अमर बलिदान करने वाले भगत सिंह, उनके साथी सुखदेव व राजगुरु भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन के ऐसे मजबूत स्तंभ हैं जिनकी देशभक्ति व मातृभूमि के प्रति समर्पण ने न सिर्फ जीते जी जन-जन में विदेशी शासन के अत्याचारों के विरुद्ध स्वाधीनता की अलख जगाई बल्कि उनका बलिदान आज भी हर भारतीय को राष्ट्रसेवा हेतु प्रेरित करता है। *- राजीव चौधरी*

दयानन्द मठ दीनानगर (पंजाब) का दौरा : स्वामी सदानन्द सरस्वती जी से की भेंट

गत दिनों दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी पंजाब के गुरुदासपुर स्थित दयानन्द मठ दीनानगर में पहुंचे और मठ के अध्यक्ष स्वामी सदानन्द जी सरस्वती से भेंट करके उनके स्वास्थ्य सम्बन्धी जानकारी ली और मठ की गतिविधियों को देखा। इस यात्रा में उनके साथ आमृतसर से श्री राकेश मेहरा, सन्दीप आहूजा एवं श्री बलविन्द्र शास्त्री जी भी साथ रहे।

MDH हवन सामग्री
मात्र 90/- किलो
10 एवं 20 किलो
की पैकिंग में उपलब्ध
प्राप्ति स्थान
दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा
15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
मो. 9540040339

प्रथम पृष्ठ का शेष

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के 198वें जन्मोत्सव पर त्रिदिवसीय वेद प्रदर्शनी

इस वेद-प्रदर्शनी के माध्यम से वेदों के आविर्भाव से लेकर आज तक के ऐतिहासिक वृत्तान्त को भी सुन्दर रीति से 2×3 फीट के लगभग अस्सी पोस्टरों के माध्यम से रोचक तरीके से प्रदर्शित किया गया था। इस अत्यन्त महत्वपूर्ण तथा उल्लेखनीय वेद प्रदर्शनी का उद्घाटन गुजरात के माननीय राज्यपाल आचार्य देवव्रत जी के करकमलों से सम्पन्न करवाया गया। इस अवसर पर माननीय राज्यपाल महोदय तथा उनके साथ में पधारी उनकी धर्मपत्नी श्रीमती दर्शनाजी के स्वागत हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र जी आर्य, गुजरात विश्वविद्यालय के संस्कृत विभाग के अध्यक्ष श्री कमलेश कुमार जी चौकसी, गुजरात प्रान्तीय आर्य प्रतिनिधि सभा के मंत्री श्री रतनशीभाई वेलाणी तथा आर्यसमाज सैजपुर बोघा के प्रधान श्री हरिभाई उपस्थित थे।

वेद-प्रदर्शनी का उद्घाटन करने के पश्चात् तथा राष्ट्रभृत् यज्ञ में आहुति प्रदान करने के पश्चात् माननीय राज्यपाल आचार्य श्री देवव्रत जी का मंच पर आगमन हुआ। इस अवसर पर सर्वप्रथम माननीय आचार्या श्रीमती दर्शना जी (धर्मपत्नी माननीय आचार्य देवव्रत जी) ने सुमधुर कण्ठ से ईश्वर भक्ति का भजन प्रस्तुत करके उपस्थित जन समूह के मन को प्रसन्न कर दिया तथा सभी के हृदय को आह्लादित कर दिया। तत्पश्चात् माननीय आचार्य देवव्रतजी के कर कमलों से 'कुछ सद्गृहस्थ महानुभावों का सम्मान' पुस्तक का विमोचन तथा 'स्वामी दयानन्द के वंशज' का सपरिचय सत्कार जैसे विविध कार्यक्रम सम्पन्न हुए।

माननीय राज्यपाल जी के उद्बोधन से पूर्व सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्रजी आर्य ने अपने स्वागत भाषण में कहा कि आचार्य देवव्रतजी केवल राज्यपाल ही नहीं हैं अपितु गुरुकुल शिक्षा प्रणाली के प्रबल समर्थक और संवर्धक भी हैं। आपके अधीन ऐसे कई गुरुकुल चल रहे हैं जहाँ प्रवेश पाने के लिये विद्यार्थियों को प्रवेश-परीक्षा देनी पड़ती है और बड़ी मुश्किल से प्रवेश मिल पाता है।

उन्होंने यह भी कहा कि पूरे देश में आप अकेले ऐसे राज्यपाल हैं जो देश के प्रत्येक नागरिक को शारीरिक, आत्मिक तथा सामाजिक रूप से उन्नति देखने के लिये सदेव प्रयत्नशील रहते हैं। "गौ आधारित खेती अभियान के माध्यम से आप अपने इस स्वप्न को साकार करने में लगे हुए हैं जिसे अब माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का भी समर्थन प्राप्त हो चुका है।

इस कार्यक्रम के अंत में माननीय राज्यपाल आदरणीय देवव्रत जी का अत्यन्त मार्मिक उद्बोधन हुआ। लगभग एक घन्टे से भी अधिक के अपने सुमधुर भाषण में महर्षि दयानन्द के महान व्यक्तित्व और कृतित्व पर उन्होंने ऐसा चमत्कारिक प्रकाश डाला जिसे सुनकर सभी श्रोतागण भावविभोर हो उठे। उन्होंने कहा कि

- शेष पृष्ठ 7 पर

(ऊपर) वेद प्रदर्शनी के उद्घाटन के अवसर पर आर्यजनों को सम्बोधित करते महामहिम राज्यपाल गुजरात आचार्य देवव्रत जी एवं मंचस्थ गुजरात सभा एवं आर्यसमाज गांधीनगर के अधिकारीगण।
(नीचे) राज्यपाल आचार्य देवव्रत को स्मृति चिह्न भेंट करते सार्वदेशिक सभा एवं गुजरात सभा के प्रधान श्री सुरेशचन्द्र आर्य जी। वेद प्रदर्शनी का अवलोकन करते महामहिम राज्यपाल महोदय साथ में हैं धर्मपत्नी श्रीमती दर्शना जी।

आर्य समाज द्वारा सेवा बस्तियों में नव सस्येष्टी होली पर्व की धूम

जगह-जगह यज्ञ, भजन, सत्संग, वस्त्र वितरण और खेली गई फूलों की होली

आर्य समाज द्वारा मनाए जाने वाले पर्वों में वासन्ती नव सस्येष्टी होली पर्व का विशेष महत्व है। यह सर्वविदित है कि पिछले दो वर्षों से कोरोना के चलते होली पर्व नहीं मनाया गया। इस वर्ष दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के सम्वर्धकों ने दिल्ली की सेवा बस्तियों सहित विभिन्न स्थानों पर यज्ञ, भजन, सत्संग और वस्त्र वितरण आदि कार्यक्रम सफलता पूर्वक सम्पन्न किए। सभा के संवर्धको द्वारा मनाए जाने वाले होली पर्व की महत्ता तब और बढ़ गई जब गरीब निर्धन बस्तियों में नव सस्येष्टी यज्ञ को पूरे विधि विधान से आयोजित किए गए, सभी स्थानों पर स्त्री पुरुष, युवा, बुजुर्ग बच्चे यजमान बनकर स्वयं को सौभाग्य शाली अनुभव कर रहे थे। वेदमंत्रों की ध्वनि से गुंजायमान

सारा वातावरण साकल्य सामग्री से सुगन्धित ही उठा था। मधुर सारगर्भित भजनों पर भाव विभोर उपस्थित जन ईश्वर भक्ति और महर्षि दयानंद तथा आर्य समाज का गौरव गान सामुहिक रूप से कर रहे थे। सत्संग के समय सभी श्रोताओं ने ध्यान पूर्वक यज्ञ, योग, स्वाध्याय, सत्संग, सेवा और राष्ट्र भक्ति का संदेश श्रवण कर सुपथ पर चलने का संकल्प धारण किया। मानव सेवा के कार्यों को आगे बढ़ाते हुए सभा की और से गरीबों को वस्त्र, बच्चों को खिलोने और अन्य जरूरत मन्दो को जूते चप्पल आदि वितरण किए गए। पढ़ने वाले बच्चों को स्टेशनरी और पुस्तकों का उपहार बहुत प्रेरणादायक सिद्ध हुआ। सभी ने फूलों की रंग बिरंगी पंखुड़ियों की वर्षा करके एक दूसरे को होली की शुभकामनाएं दल। और होली के नाम पर होने वाले हुड़दंग से दूर रहकर सेवा साधना के पथ पर चलने का निश्चय किया और नशे आदि की आदतों का त्याग करने का संकल्प लिया।

Continue From Last issue

God and The Veda

7th Chapter

Soul and Unconscious Element

God and Soul are both two types of Conscients, the former being indivisibly one and the latter 'numerous'. The theory of 'incarnation' does not fit in with Him. It is the result of the ignorance and communal interest; because he must die, who takes birth. But God is out of the reach of birth and death. Though 'Jiva' or 'Soul' is also beginningless and endless in its nature, still he is associated with and presides over a 'body', created by God. It is therefore that he becomes responsible for its deeds, as it is he himself who engages and controls the mind and senses in different acts. This he does while he remains in the body. The moment it goes out of the body, the latter becomes dead, i.e. senseless and theefore lifeless. Being Omnipresent, God is already present everywhere and in every particle, and it is therefore that He also remains in the body along with the Soul, and even after his departure. But the body remains alive only in the presenee of the Soul, which alone makes it active, by employing it into different activities of its own liking. Thus, by coming into and going out of body, this Soul becomes mobile, while due to His omnipresence he remains everywhere, though being static at the same time. The mind alongwith Indriyas or senses is called Antahkarana or inner instrument and is an associate of soul. It is this instrument through which Soul acts in a body and also feels sorrows and joy as the result of those acts. It is therefore that while God is said to be constant or ever present (Sat) Conscient (Chit), and verjoyous (Ananda rupa), this Soul is said to be only Sat and Chit, because he also feels sorrows alongwith the joy. But the third immortal and unborn element is Nature or Prakriti, which has neither chit nor Ana nda and is therefore called as Sat alone. Being non-conscient, it is said to be immobile and non-moving: Because of being Omni- present and Omnipotent God is Omnipresent also, and therefore He is present in every living Soul. It is therefore that He needs no mouth or other speaking organ or system to give sermon or to teach someone. He only illuminates all the knowledge enshrined in the Vedas in the self of this Soul. Now that soul teaches or gives this knowledge to others through its own mouth. In the beginning of Creation, this knowledge was first revealed by God in souls of Agni, Vayu, Aditya and Angira, in the form of Rgveda Yajurveda, Samaveda and Atharvaveda respectively. Vedas are four in number, neither less nor more. God did not give them in any of the worldly languages, instead he utilised Sanskrit as medium, as it was no one's language. In the later times, people started utilising this language as their own medium of expression. Therefore it is improper to say that God becomes partial if He selected one of the Human languages, i.e. Sanskrit, as a medium of His self-expression. Not only the language, God illuminated the meanings of these words also in the hearts of those Rishis, automatically Whenever the Seers and Yogis bot into after proper concentration, God illuminated their hearts with the meaning at the desired Mantras. After understanding those Mantras fully, based. their own books on history, which were known as Brahmanas, because they 'explained the Brahman. i.e. Veda'. In Nirukta and such other books of the Seers, the Brahmanas have been treated separately from the Vedas. The same is true about the socalled branches of the Vedas. As these are based on the human memory, they can be treated at par with the Vedas. Vedas are eternal and in the form of same mantras and in the same order, not in the order arranged in the branches. Neither they can be called as 'Books' which are written by the Seers, based on their knowledge of the Vedas .

To be continued........

With thanks : "Flash of Truth"

by Satyakam Verma :
Abridged form of
'Satyarth Prakash' by
Maharishi Dayanand Saraswati

प्रेरक प्रसंग

आर्यसमाजियों की श्रद्धा तथा सेवाभाव

संस्थाओं के झमेलों ने आर्यसमाज के संगठन और प्रचार को बड़ी क्षति पहुँचाई है। संस्थाओं के कारण अत्यन्त निकृष्ट व्यक्ति आर्यसमाज में घुसकर ऊँचे-ऊँचे पदों पर अधिकार जमाने में सफल हो गये हैं। लोग ऐसे पुरुषों को देखकर यह समझते हैं कि आर्यसमाजियों में श्रद्धा नहीं है।

आर्यवीरों ने देश-धर्म के लिए कितने बलिदान दिये हैं। आर्यो की श्रद्धा तथा सेवाभाव का एक उदाहरण यहाँ देते हैं। लाहौर में एक महाशय सीतारामजी आर्य होते थे। इन्हीं को चौधरी सीताराम कहा जाता था। ये आर्यसमाज के सब कार्यों में आगे-आगे होते थे, इसलिए इन्हें चौधरी सीताराम आर्य कहा जाता था। लाला जीवनदासजी की चर्चा करते हुए भी हमने इनका उल्लेख किया था।

ये लकड़ी का कार्य करते थे। इनकी दुकान आर्यसमाज के प्रमुख लोगों के मिलन तथा विचार-विमर्श करने का एक मुख्य स्थान होता था। आर्ययुवक जो स्कूलों, कॉलेजों में पढ़ते थे, वे उनकी दुकान का चक्कर लगाये बिना न रह सकते थे। एक बार महाशय सीतारामजी को निमोनिया हो गया। वे कई दिन तक अचेत रहे। उनके आर्यसमाजी मित्रों ने उनकी इतनी सेवा की कि बड़े-बड़े धनवानों की सन्तान भी ऐसी देखभाल न करे। लाहौर के बड़े-से-बड़े डॉक्टर को आर्यलोग बुलाकर लाये। अपने-आप ओषिधियाँ लाते। आर्यवीरों ने दिन-रात अपना समय बाँट रक्खा था। हर घड़ी उनकी सेवा और देखभाल के लिए आर्यपुरुष उनके पास रहते।

वे गृहस्थी थे। पत्नी आज्ञाकारिणी थी। पुत्र भी धर्मप्रेमी थे। महाशय राजपालजी का मुसलमान हत्यारा जब छुरे का वार करके भागा था तो इन्हीं महाशयजी के सुपुत्र श्री विद्यारत्न ने ही उसे पकड़ा था। एक और आक्रमण के समय क्रूर घातक को स्वामी श्री स्वतन्त्रानन्दजी महाराज ने धर दबोचा था।

हमारा इस प्रसंग को छेड़ने का अभिप्राय यह है कि ऐसे सद्गृहस्थी के घर में सब-कुछ था तथापि आर्यभाईयों में अपने इस आदर्श कर्मवीर के लिए इतना प्यार था, उनके प्रति ऐसी श्रद्धा थी कि उनके रुग्ण होने पर उनकी सेवा करने के लिए आर्यो में एक होड़ और दौड़-सी थी। जब महाशयजी स्वस्थ हुए तो इस सेवाभाव, इस भ्रातृभाव से इतने प्रभावित हुए कि अब वे पहले से भी कहीं अधिक आर्यसामाजिक कार्यो में जुटे रहते। वे दुकानदार भी थे और प्रचारक भी। वे कार्यकर्त्ता भी थे और संगठन की कला के कलाकार भी थे।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

***तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी* : पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

संस्कृत वाक्य प्रबोध

मिश्रितप्रकरणम्

गतांक से आगे - संस्कृत	हिन्दी
763. यः पद्भ्यां भ्रमति सोऽरोगो जायते।	जो पैरों से चलता है वह रोग रहित होता है।
764. व्यजनेन वायुं कुरु।	पंखे से वायु (हवा) कर।
765. किं घर्मादागतोऽसि यत् स्वेदो जातोऽस्ति।	क्या घाम से आया है जो पसीना हो रहा है?
766. स्वस्थ शरीरे नित्यं स्नात्वा मितं भोक्तव्यम्।	अच्छे शरीर में रोज नहा के थोड़ा खाना चाहिये।
767. जलवायु शुद्धौ सेवनीयौ।	पवित्र जल और वायु का सेवन करना चाहिये।
768. सर्वर्तुके शुद्धे गृहे निवसनीयम्।	जो सब ऋतुओं में सुख देनेवाला शुद्ध घर हो उसी में रहना चाहिये।
769. नैव केनचिन्मलिनानि वस्त्राणि धार्याणि।	किसी को भी मैले कपड़े नहीं पहनने चाहियें।
770. तव का चिकीर्षास्ति?	तेरी क्या करने की इच्छा है?
771. गृहं गत्वा भोक्तुम्।	घर जाके खाने की।
772. त्वं सक्तुं भुगंक्षे न वा?	तू सत्तू खाता है या नहीं?
773. घृतदुग्धमिष्टैः सहाऽद्मि।	घी, दूध और मीठे के साथ खाता हूँ।
774. त्वयाम्रफलानि चूषितानि न वा?	तूने आम चूसे या नहीं?
775. उर्वारुकफलान्यत्र मधुराणि जायन्ते।	खरबूजे के फल यहां मीठे होते हैं।
776. इक्षुभ्यो गुडादिकं निष्पद्यते।	ऊख से गुड़ आदि बनाये जाते हैं।
777. इदानीमाकण्ठं दुग्धं पीतं मया।	इस समय गले तक मैंने दूध पिया।
778. तक्रं देहि।	मठा दे।
779. दुग्धं पिब।	दूध पी।
780. अत्र श्वेता शर्करा वर्तते।	यहां सफेद चीनी है।
781. अयं रुच्या दधनौदनं भुङ्क्ते।	यह प्रीति से दही के साथ भात खाता है।
782. अद्य मोदका भुक्त न वा?	आज लड्डू खाये या नहीं?
783. त्वया कदाचित्कृशरा भुक्ता न वा?	तूने कभी खिचड़ी खाई है या नहीं?
784. मयाऽपूवा भक्षिताः।	मैंने मालपूवे खाये हैं।
785. सशर्करं दुग्धं पेयम्।	शक्कर के सहित दूध पीना चाहिये।
786. येन धर्मः सेव्यते स एव सुखी जायते।	जो धर्म का सेवन करना है वही सुखी होता है।

क्रमशः - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

पृष्ठ 2 का शेष

यह इस्लामोफोबिया का नया पाखण्ड....

तब अचानक पहला और दूसरा गुट यानि राजनितिक इस्लाम और मानवतावादी इस्लाम सामने आया और इसे इस्लामो-फोबिया करार दिया।

मसलन ये लोग इस एक पाखंड के दम पर दूसरा नया पाखंड खड़ा कर देते हैं। लोग समझते हैं कि ये तो मानवतावाद है। जबकि राजनितिक, मानवतावादी और जिहादी इन तीनों का लक्ष्य एक है। इनकी सेना के तौर पर सिर पर गोल टोपी लगाये ये बेपरवाह लोग पूरी दुनिया का सियासी और मजहबी तापमान बढ़ा देते हैं। जब फ्रांस के राष्ट्रपति मैकों ने इसे खुलेतौर पर इस्लामिक आतंक कहा तो भोपाल में जहां मैकों की तस्वीरों को सड़कों पर लगाकर बाकायदा जूतों से कुचला गया, जमकर प्रदर्शन और नारेबाजी भी हुई थी।

जबकि अधिकांश खलीफा, इमाम और खुद मुहम्मद के परिवार की हत्याएं मुसलमानों ने इस्लाम के नाम पर ही की हैं। आज भी पाकिस्तान, अफगानिस्तान, सीरिया, नाइजारिया आदि देशों में वही हो रहा है। इसलिए दोष इस्लाम के राजनीतिक मतवाद में है, जिससे स्वयं मुस्लिम समाज भी त्रस्त है। इसलिए इस्लाम का फोबिया कोई नफरत नहीं है। ये सच है, इसमें मध्य एशिया में मुसलमान यूरोप में ईसाई त्रस्त हैं। सच्ची बातों की अपनी ताकत होती है, जिसके सामने बम-बंदूकें निष्फल होतीं हैं। इसीलिए इब्न वराक, रुश्दी, अली सिना या वफा सुलतान से तसलीमा नसरीन जैसों से तमाम मुस्लिम सत्ताएं परेशान हो जाती हैं। आखिर इन लेखकों ने कुछ शब्द ही तो लिखें, पर उनकी सच्चाई की आंच लाखों मदरसों पर हुकूमत करने वाले हजारों आलिम-उलेमा नहीं झेल पाते।

तब ये इन असली लेखकों पर हमले करते हैं। जब इनके हमलों का विरोध होता है तो अचानक राजनितिक और नकली लिबरल सामने आते हैं और पाखंड खड़ा करते हैं कि ये देखो इस्लामोफोबिया। लेकिन कमाल की बात देखिये कि इन छोटी-छोटी चीजों को भुलाकर संयुक्त राष्ट्र महासभा इस्लामोफ़ोबिया विरोधी दिवस मनाने को तैयार हो जाती है। जबकि ये साफ़ हो चुका है कि ये सिर्फ पाखंड है ताकि इसकी आड़ में सच्चाई पर हमले किया जा सकें।

- सम्पादक

सुख समृद्धि हेतु यज्ञ कराएं

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की योजना 'घर-घर-यज्ञ, हर-घर-यज्ञ' राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में उत्साह पूर्वक नित्य निरंतर प्रगति की ओर है। वैदिक वाङ्मय में यज्ञ की विशेष महत्ता का वर्णन मिलता है। यज्ञ के द्वारा संसार के सभी ऐश्वर्य मानव को प्राप्त होते हैं। यजुर्वेद में कहा गया है कि 'अयं यज्ञो भुवनस्य नाभिः' अर्थात् यज्ञ संसार का केन्द्र बिन्दु है, अर्थात् विश्व का आधार है। शतपथ ब्राह्मण में कथन है कि 'स्वर्ग कामो यजेत्' अर्थात् हे मनुष्य यदि तू संसार के सुख प्राप्त करना चाहता है तो यज्ञ कर। आप भी अपने घर-परिवार में यज्ञ कराने के लिए ***मो.नं. 9650183335 पर*** सम्पर्क करें। यदि परमात्मा की व्यवस्थानुसार आपका परिजन/परिचित मृत्यु को प्राप्त होता है, उसके अन्तिम संस्कार की वैदिक रीति से व्यवस्था हेतु भी आप सम्पर्क कर सकते हैं। *- संयोजक*

आर्य सन्देश पत्र के स्वामित्व आदि सम्बन्धी विवरण

फार्म 4 नियम 8

(प्रेस एण्ड रजिस्ट्रेशन ऑफ बुक एक्ट)

प्रकाशक का नाम	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली - 110001
प्रकाशक की अवधि	:	साप्ताहिक
प्रकाशक का समय	:	प्रति बृहस्पतिवार एवं शुक्रवार
मुद्रक का नाम	:	धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
मुद्रक का पता	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15- हनुमान रोड,नई दिल्ली- 110001
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
प्रकाशक का पता	:	पूर्ववत्
सम्पादक का नाम	:	धर्मपाल आर्य
क्या भारत का नागरिक है	:	हाँ
सम्पादक का पता	:	पूर्ववत्
उन व्यक्तियों के नाम पते जो समाचार पत्र के स्वामी हों तथा समस्त पूंजी के 1% से अधिक के साझेदार/हिस्सेदार हों	:	दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली -110001

मैं धर्मपाल आर्य इस लेख पत्र के द्वारा घोषणा करता हूं कि उपर्युक्त विवरण जहां तक मेरा ज्ञान और विश्वास है, सही है।

- धर्मपाल आर्य, प्रकाशक एवं मुद्रक

पृष्ठ 5 का शेष

ऋषिवर दयानन्द के जन्मदिन पर आज हम सबको यह संकल्प लेना चाहिये कि हम तन, मन, धन से महर्षि दयानन्द के बतलाये मार्ग पर चलकर वैदिक संस्कृति के प्रचार-प्रसार में लग जायेंगे। माननीय राज्यपाल जी ने आर्यवीरदल के संगठन को अधिक से अधिक मजबूत करने पर भी काफी बल दिया।

इस अवसर पर सार्वदेशिक सभा के प्रधान द्वारा माननीय राज्यपाल महोदय को भोजपत्र पर हाथ से लिखे हुए गायत्री मंत्र तथा वैदिक राष्ट्रीय गान स्मृति-चिन्ह के रूप में भेंट किया गया। सम्पूर्ण कार्यक्रम में आर्यसमाज कांकरिया, अहमदाबाद के प्रधान डॉ. कमलेशजी चौकसी का अत्यन्त महत्वपूर्ण योगदान रहा। राष्ट्रगान के साथ यह कार्यक्रम पूर्ण हुआ। *- मन्त्री*

शोक समाचार

श्री पुरुषोत्तमलाल गुप्ता जी का निधन

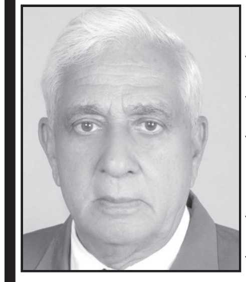

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के पूर्व कोषाध्यक्ष, दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के पूर्व अधिकारी एवं सभा द्वारा संचालित रतचन्द आर्य पब्लिक स्कूल सरोजनी नगर के पूर्व प्रधान श्री पुरुषोत्तमलाल गुप्ता जी का दिनांक 27 फरवरी, 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 1 मार्च, 2022 शिवरात्रि को आर्यसमाज डिफेंस कालोनी में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों सहित अनेक महानुभावों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री बी.के. राय जी का निधन

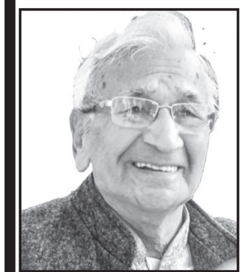

आर्यसमाज अशोक विहार फेज-1, के पूर्व प्रधान एवं रामजस स्कूल करोल बाग के पूर्व अधिकारी श्री बी. के. राय जी का दिनांक 20 मार्च, 2022 को लगभग 87 वर्ष की आयु में निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 22 मार्च को आर्यसमाज अशोक विहार-1 में सम्पन्न हुई, जिसमें सभा अधिकारियों सहित अनेक महानुभावों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री रामभरोसे जी को मातृशोक

आर्यसमाज जहांगीर पुरी के मन्त्री एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के विशेष आमन्त्रित सदस्य श्री रामभरोसे जी की पूज्य माताजी श्रीमती उर्मिला देवी जी का दिनांक 22 मार्च, 2022 को रात्रि 10:45 पर निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार 23 मार्च को आजादपुर शमशान घाट पर पूर्ण वैदिक रीति के साथ किया गया। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा दिनांक 25 मार्च को आर्यसमाज जहांगीरपुरी में सम्पन्न होगी।

श्री रविदत्त आर्य जी का निधन : आर्यसमाज ए ब्लाक जनकपुरी के पूर्व प्रधान श्री रविदत्त आर्य जी का दिनांक 17 मार्च, 2022 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार सुभाष नगर शमशान घाट पर सभा के संवर्धकों द्वारा पूर्ण वैदिक रीति के साथ सम्पन्न कराया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 21 मार्च, 2022 से रविवार 27 मार्च, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

LPC, DRMS, दिल्ली-6 में पोस्ट करने की तिथि 23-25/03/2022 (बुध-वीर-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-23

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 23 मार्च, 2022

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के अन्तर्गत

वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

अब

amazon

पर भी उपलब्ध

अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें

bit.ly/VedicPrakashan

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

मो. 09540040339, 011-23360150

प्रतिष्ठा में,

भजन संगीत एवं गीता प्रवचन

आर्यसमाज पूर्वी पंजाबी बाग नई दिल्ली के तत्वावधान में शहीद ढींगरा पार्क में 24 से 27 मार्च, 2022 तक भजन संगीत एवं गीता प्रवचन का कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। समापन समारोह 27 मार्च को होगा। यज्ञब्रह्मा आचार्य आनन्द प्रकाश होंगे। भजन आचार्य अमृता आर्य एवं गीता प्रवचन आचार्य श्यामदेव आर्य जी के होंगे।

– सुरेन्द्र कोछड़, मन्त्री

महाशय धर्मपाल जी के 99वें जन्मोत्सव पर 90 वर्ष से अधिक आयु वाले 10 वरिष्ठ आर्य महानुभावों का सम्मान

प्रतिवर्ष की भांति इस वर्ष भी महाशय धर्मपाल जी के जन्मोत्सव पर दिल्ली के 10 वरिष्ठ आर्यजनों का सम्मान किया गाएगा। अत: दिल्ली की आर्यसमाजों के अधिकारियों से निवेदन है कि अपनी आर्यसमाज के 90 वर्ष से अधिक आयु के वरिष्ठ आर्यजनों के नाम उनकी जन्मतिथि के साथ दिनांक 24 मार्च, 2022 को सायं 5 बजे तक श्री सन्दीप आर्य जी को 9650183339 पर उनके फोटो के साथ नाम एवं जन्मतिथि लिखकर व्हाट्एप्प कर दें। उसके बाद प्राप्त होने वाले प्राप्त भेजे गए नामों पर विचार किया जाना सम्भव नहीं होगा।

चयनित सभी 10 वरिष्ठ महानुभावों के परिवारों को तथा उनकी आर्यसमाज के अधिकारियों 25 मार्च सायं 5 बजे तक सूचित किया जाएगा। सम्मान समारोह 26 मार्च, 2022 को आयोजित होगा।

भजन संध्या का आयोजन

आजादी के अमृत महोत्सव के अवसर पर आर्यसमाज झिलमिल कालोनी, दिल्ली द्वारा दिनांक 27 मार्च, 2022 को भजन संध्या का आयोजन किया जा रहा है। इस अवसर पर यज्ञ ब्रह्म आचार्य शिवा शास्त्री होंगे। भजन आचार्य सतीश सत्यम जी के होंगे। अध्यक्ष श्री सुरेन्द्र रैली, विशिष्ट वक्ता श्री विनय आर्य एवं अतिथि के रूप में निगम पार्षद श्रीमती गीतिका पंकज लूथरा एवं श्री सतीश चड्डा जी उपस्थित होंगे।

– हरिओम बंसल, प्रधान

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह